



## मैथिली भाषा तथा इसकी लिपियों का संवर्द्धन एवं संरक्षण

### चर्चा में क्यों?

हाल ही में एक समिति ने मैथिली भाषा तथा इसकी लिपि के संवर्द्धन और संरक्षण (Promotion and Protection of Maithili Language) विषय पर अपनी रिपोर्ट मानव संसाधन विकास मंत्रालय को (Ministry of Human Resource Development) सौंपी। समिति द्वारा तैयार की गई इस रिपोर्ट में मैथिली भाषा के संवर्द्धन और संरक्षण हेतु कई सफ़ारिशों की गई हैं।

### सफ़ारिशों पर तत्काल कार्रवाई का फैसला

मंत्रालय द्वारा रिपोर्ट की जाँच किये जाने के बाद समिति की सफ़ारिशों में से कुछ पर तत्काल कार्रवाई करने का नरिणय लिया गया है-

1. मथिलिाक्षर के संरक्षण, संवर्द्धन और विकास के लिये दरभंगा के ललति नारायण मथिलिा विश्वविद्यालय या कामेश्वर सह-दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय में से कसिी एक परसिर में पांडुलिपि केंद्र की स्थापना की जाएगी।
2. मथिलिाक्षर (Mithilakshar) के उपयोग को आसान बनाने के लिये इस लिपि को भारतीय भाषाओं के लिये प्रौद्योगिकी विकास संस्थान (Technology Development of Indian Languages-TDIL) द्वारा जल्द-से-जल्द कंप्यूटर की भाषा (यूनिकोड) में परिवर्तित करने का काम पूरा किया जाएगा।
3. मथिलिाक्षर लिपि को सीखने के लिये श्रव्य-दृश्य/ऑडियो-विजुअल (Audio-Visual) तकनीक का विकास किया जाएगा।

### संरक्षण एवं संवर्द्धन की आवश्यकता

- पछिले 100 वर्षों के दौरान इस लिपि के उपयोग में कमी आई है और इसके साथ ही हमारी संस्कृतिका भी क्षय हो रहा है।
- चूँकि मैथिली भाषा की स्वयं की लिपिका उपयोग नहीं किया जा रहा, इसलिये संवैधानिक दर्जा मिलने के बावजूद भी इसे समग्र रूप से विकसित करने की आवश्यकता है।
- इन सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने मैथिली भाषा और उसकी लिपियों के संवर्द्धन और संरक्षण पर रिपोर्ट तैयार करने के लिये वर्ष 2018 में इस समिति का गठन किया था।

### समिति के सदस्य

- समिति में चार सदस्य शामिल थे- ललति नारायण मथिलिा विश्वविद्यालय के मैथिली विभागाध्यक्ष, प्रो. रमण झा; कामेश्वर सह-दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय के व्याकरण विभागाध्यक्ष, डॉ. पं. शशानिथ झा; ललति नारायण विश्वविद्यालय के सेवानवृत्त प्रो. रत्नेश्वर मशिर व पटना स्थिति महावीर मंदिर न्यास के प्रकाशन विभाग के पदाधिकारी पं. भवनाथ झा।

### पृष्ठभूमि

- मथिलिाक्षर या तिरहुत (Mithilakshar or Tirhuta) व्यापक संस्कृतिका वाली 'मथिलिा' की लिपि है। मथिलिाक्षर, बांग्ला, असमिया, नेबारी, ओडिया और तबिबती की लिपियों इसी परिवार का हसिसा है।
- यह एक अत्यंत प्राचीन लिपि है और व्यापक उत्तर-पूर्वी भारत की लिपियों में से एक है।
- मथिलिाक्षर 10वीं शताब्दी तक अपने वर्तमान स्वरूप में आ गई थी।
- मथिलिाक्षरों के प्राचीनतम रूपों के प्रयोग का साक्ष्य 950 ई. के सहोदरा के शिलालेखों में मिलता है।
- इसके बाद चंपारण से देवघर तक पूरे मथिलिा में इस लिपिका उपयोग किया गया।

### जापान की बुलेट ट्रेन को भी मथिलिा पेंटगिंस से सजाने पर कथिया जा रहा है वचिार

जापान में बुलेट ट्रेन को बहिर के विश्व वखियात मथिलिा पेंटगिंस से सजाने पर वचिार कथिया जा रहा है। जापान की सरकार ने इस काम के लिये भारत के रेल मंत्रालय से कलाकारों की मांग की है। उललेखनीय है कि कुछ समय पूर्व भारतीय रेल के समस्तीपुर मंडल ने संपूर्ण क्रांति एकसपरेस को मथिलिा पेंटगिंस से सजाया था, जसिकी सराहना संयुक्त राष्ट्र ने भी की थी। वैसे जापानी लोग मथिलिा पेंटगिंस से पहले ही से परिचित हैं क्योंकि वहाँ जापान-भारत सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देने वाली संस्था ने मथिलिा म्यूजियम भी बनाया है।

